ज्ञान अंजन

ॐ

श्री राम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला॥

राम कृपा नाशहि सब रोगा।
जो एहि भाँति बने संयोगा॥

आत्मा के लिए भोजन

कर कृपा प्रभु दीन दयाला।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला॥
करो दया, करो दया, करो दया मेरे साईं।
ऐसी मति दीजै मेरे ठाकुर सदा २ तुध ध्याई॥

स्वांस स्वांस सिमरू गोविन्द;
मन अन्तर की उतरे चिन्त।
जाचक जन जाचै प्रभु दान,
कर कृपा देवो हरि नाम।
साध जना की मागू धूरि,
पारब्रह्म मेरी श्रद्धा पूर पूर।
सदा सदा प्रभु के गुण गाऊं,
स्वास-स्वास प्रभु तुम्हें ध्याऊं।
चरण कमल सिऊ लागे प्रीत,
भगति करूं प्रभु की नितनीत।
एक ओट एको आधार,
नानक मागें नाम प्रभु सार।

मंगल भवन अमंगल हारी, द्रवहु सो दशरथ अजर विहारी।
दीनदयाल विरह सम्भारी, हरो नाथ मम संकट भारी।

आओ भई मिलकर अपने प्रभु के आगे अरदास करें ताकि हमें सदा ऐसे ही लगे कि प्रभु तो सदा मेरे पास है।

प्रभु पास जन की अरदास मेरा तू सच्चा साई।
तूं रखवाला सदा सदा हेऊ तुझ ध्याई।
प्रभु पास···

एह जीअ जत सब तेरेआ तूं रहया समाई।
जो दास तेरे की निन्दा करे तिस मार पचाई।
प्रभु पास···

चिन्ता छड अचिन्त रहो नानक लग पाई।
प्रभु पास···

जब हम ऐसे अरदासे अपने प्रभु के आगे करते रहेंगे तो ऐसा लगेगा कि प्रभु मेरा हर समय हर जगह, सदा सहायक है और माता पिता की तरह मेरी प्रतिपालना करता है सो आओ मिल कर इसे प्रकट करें।

शब्द

प्रभु मेरो इत उत सदा सहाई
मन मोहन मेरे जीअ को प्यारो
कबन कहा गुन गाई। प्रभु मेरो···
खेल खिलावे लाड लडावे सदा २ अनदाई।
प्रभु मेरो···

प्रतिपाले बारिक की न्याई जैसे मात पिताई।

प्रभु मेरो··

तिस विन निमरव नहीं रह सकिए विसर न कबहु जाई।

प्रभु मेरो··

कहो नानक मिल सतसगत ते मग्न भये लिव लाई।

प्रभु मेरो इत··

जब हरि के चरणों में मग्न हो गये तो जीव्हा भी उसके गुणगान गाने विना नहीं रह सकती और अगर न गाये तो इसे नीचे लिखे शब्द द्वारा जाग्रत करते रहना चाहिए।

शब्द

कीरत प्रभु की गाओ मेरी रसना
कीरत प्रभु की गाओ।
कीरत··
अनिक बार कर सन्तन वन्दन
उहां चरण गोविन्द जी के बसना।
कीरत प्रभु··
अनिक बार कर द्वार न पाऊ
होय कृपाल तां हरि २ ध्याऊ।
कीरत··
कोट कर्म कर देह न सोधा
साध संगत में मन प्रबोधा।
कीरत प्रभु··
तृष्ण न बूझी बहु रंग माया
नाम लेत सर्व सुख पाया।
कीरत··
पारब्रह्म जब भये दयाला
कहो नानक तब कटे जजांला।
कीरत··

जब हमारी जीह्वा को भी यही आदत हो गई कि यह प्रभु गुणगान बना नहीं रह सकती और आंखों को आदत हो गई कि वह हरि दर्शन बना नहीं रह सकती पैरों को ऐसे हुआ सतसंग में जाने बिना नहीं रह सकते तो ऐसे लगने लगा कि वह परमात्मा जो कि सर्वशक्तिमान सर्वज्ञ (omnipresent omnipotent है वह मेरा स्वामी बन गया है तो हमने अपने स्वामी से बातचीत आरम्भ कर दी, शब्द के द्वारा

शब्द

तूं समरथ तूं है मेरा स्वामी सब किछ तुम ते तू अन्तरयामी।
पारब्रह्म पूर्ण जन ओट
तेरी शरण उधेरे जन कोट। तूं समरथ···
जेते जीअ तेते सब तेरे
तुम्हरी कृपा ते सुख घनेरे
जो किछ वरते सब तेरा भाण
हुकम बूझे सो सच समाण। तूं समरथ···
कर कृपा दीजे प्रभु दान
नानक सिमरे नाम निधान। तूं समरथ···

ऐसे अभ्यास के द्वारा जब हमने समरथ स्वामी को अपना बना लिया और उन से बातचीत भी शुरू हो गई तो हमें ऐसे आभास होने लगा कि एक आसरा मुझे उस समरथ-परम पिता का है इसलिए अब मेरे जीवन में जो भी परिस्थितियां आ रही है सब ठीक ही है क्योंकि मेरा मीत (परमात्मा) कभी भी मेरे लिए बुरा नहीं कर सकता तो फिर कह उठे संसार में भी जिसके हम आश्रित होते है उसी के गुण गाते हैं बच्चे जब माता पिता के आश्रित होते हैं तो उन्ही के गुण गाते है

सेवक मालिक के आश्रित होता है जो मालिक के गुण गाता है। जो प्रभु के दास है वह भी यही चाहते है कि हम सदा प्रभु के गुण गायें और कहते है कि हे प्रभु तेरे बिना में कुछ नहीं जानना चाहता केवल तेरे गुण गाना चाहता हूँ सो कह उठते है।

शब्द

तुज बिन अवर न जाणा मेरे साहिबा गुण गांवा नित तेरे।
गुण गांवा नित...
तुझ बिन अवर...

मन मन्दिर तन वेस कलन्दर घट ही तीर्थ नावा
एक शब्द मेरे प्राण वसत है बहुड़ जन्म न आवा।
तुझ बिन...

मन वेधिआ दयाल सेती मेरी माई कौन जाने पीर पराई।
हम नाही चित पराई
हम नाही चित पराई
तुझ बिन...

अगम अगोचर अलख अपारा चिन्ता करो हमारी
जल थल महिअल भरपूर लीन्हा घट घट ज्योति तुम्हारी।
तुझ बिन...

सिख मत सब बुद्धि तुम्हारी मन्दिर छावा तेरे। तुझ बिन...
जीअ जंत सब शरण तुम्हारी सर्व चिन्त तुध वासे
जो तुध भावे सोई चंगा इक नानक की अरदासे।
तुझ बिन...

जब हम अपना सर्वस्व ही अपने प्रभु को अपर्ण की कोशिश करते है तो ऐसे लगता है कि हम केवल एक कृमि की तरह है अपने प्रभु प्रीतम के आगे सब उसी को ही वड़ाई है और वही हमारा सच्चा सहायक (Guide) तथा मित्र है और उसी को ही सारी वड़ाई है सो नीचे लिखे शब्द से उसकी वड़ाई गाते है।

शब्द

वडी तेरी वडिआई
दाता वड़ी तेरी वडिआई।

तूं अगम दयाल अगम्य है
वडी तेरी वडिआई।

हकं कि आ सालाही किरमजंत
वडी तेरी वडिआई।

मैं तुझ विन वेली को नहीं
तूं अंत सरवाई। वडी तेरी...

जो तेरी शरण गति
तिस ले हो छडाई। वडी तेरी...

नानक वे परवाह तिस तिल न तमाई
वडी तेरी वडिआई दाता
वडी तेरी वडिआई...

भजन

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो २
,, ,, ,, ,, ,,
काम करते चलो नाम जपते चलो
,, ,, ,, ,, ,, ,,
प्यारे गोविन्द का नाम रटते चलो
नाम धन का खजाना बढ़ाते चलो। कृष्ण...
सुख में फूलो नहीं दुख में भूलो नहीं
प्यारे गोविन्द का नाम भूलो नहीं
नाम धन का खजाना बढ़ाते चलो। कृष्ण...
देखना इन्द्रियों के न घोड़े भगे
रात दिन इनको संयम के कोड़े लगे
अपने रथ को सुमार्ग पर लगाते चलो।
प्राण जाये मगर नाम भूलो नहीं
दुख में तड़पो नहीं सुख में भूलो नहीं
अपने जीवन को सफल बनाते चलो।
ध्यान आयेगा उनको कभी न कभी
दास पायेगा उनको कभी न कभी
ऐसा विश्वास मन में जमाते चलो। कृष्ण...

ऐसे प्रार्थना करते 2 एक दिन सब पापों से मुक्त हो ही जायेंगे तो फिर हमारा मन एक आश्रय ग्रहण कर लेगा जो कभी भी नहीं छूटेगा तो हम कह उठेंगे।

भजन

ए राम तेरे नाम का मुझ को आधार है
अन्धे को जैसे लाकड़ी तन का गहार है।
लिखने के राम नाम से जल में शिलातरी
कैसे मनुज न जा सके भवसिन्धुपार है। ए राम···
जप तप यज्ञ और कर्म बन पड़े नहीं
कलियुग में तेरे नाम की महिमा अपार है। ए राम···
शबरी के पाद नीर से सरोवर विमल हुआ
छूने के चरण से तरी गौतम की नार है। ए राम···
मन में भरोसा करके सिमर राम नाम तू
ब्रह्मानन्द मिटे जन्म तेरा बारम्बार है। ए राम···

अगर लड़ाई सारी परमात्मा की है तो फिर उसी का ही भजन क्यों न करे और अपने मन को कीर्तन द्वारा क्यों न जगाया जाये बस एक यह जाग जायेगा तो फिर यह संसार के पदार्थों में सदुपयोग नही और सदा के लिए सुखी हो जायेगा सो आओ मिलकर इस मन के जगायें और कहें कि हे मेरे मन नारायण का भजन कर। नाम में कोई अन्तर नारायण कहे राम कहे गोविन्द कहे या गुरु कहे सो, बोलो।

मन को चेतावनी

भजमन नारायण नारायण नारायण
श्री मन नारायण नारायण नारायण।
हमने अपने आप की दे दी तुम को डोर
आगे-मरजी आपकी ले जाओ जिस ओर। भजमन···

नहीं विद्या नहीं बाहें बल
नहीं तीर्थ नहीं दान
तुलसी ऐसे अनाथ की
पत राखो भगवान । भजमन···

धन यौवन यूं जायेंगे
जैसे उड़त काफूर
मन मूरख गोपाल भज
क्यों चाटत जग धूल भजमन···

जीह्वा गुण गोविन्द भजो, कर्ण सुनो हरिनाम
कहो नानक सुन रे मना, पड़े न जम के धाम ।
चिन्ता ताकि कीजिए जो अनहोनी होय
यह मार्ग संसार को नानक थिर नहीं कोय । भजमन नारायण···
सब सुख दाता राम है दूसर नाहिन कोय ।
कहो नानक हरि भज मना जिह सिमरत गति होय ।
तुलसी जग में आयके कर लीजे दो काम
देने को टुकड़ों भलो, लेने को हरि नाम । भजमन·····

पहले प्रभु को सिमरिए, पीछे करिए काज
काज संवारेंगे प्रभु, राखेंगे तेरी लाज । भजमन नारायण···
राम नाम को आलसी, भोजन को होश्यार
तुलसी ऐसे जीव को बार २ धिक्कार । भजमन नारायण···

राम झरोखे बैठ के, सब का मुझरा लेय,
जैसी २ चाकरी, तैसा ही फल देय ।

काम क्रोध मद लोभ की, जब लग हृदय में खान,
क्या पंडित क्या मूर्ख, दोनों एक समान । भजमन....

रात गवाई सोय के, दिवस गवाया खाय,
हीरे जैसा जन्म यह, कौड़ी बदले जाये । भजमन....

कबीरा सूता क्या करे, बैठा रहो और जाग,
जा के संग ते बिछड़ा, ताही के संग लाग । भजमन....

कबीरा सूता क्या करे, उठ के न जपे मुरार,
इक दिन सोवन होयोगो, लावे गौंड पसार । भजमन....

नाम जपो निर्भय रहो, अंग न व्यापै पीर,
जन्म मरण सशय मिटे गावे दास कबीर । भजमन....

तुलसी या संसार में भूपति भये अनेक
चलती बेरी संग में ले न गये तृण एक । भजमन....

राम नाम उर में गह्यो जा के सम नहीं कोय
जंह सिमरत संकट मिटे दरस तुह्मारो होय । भजमन....

शब्द

सच्चे पातशाह बख्शो मेरी खता मैं निमाणा
तूं बेअंत तेरा अन्त न जाणा । सच्चे....

तूं बेअंतं को विरला जाणे
गुरु परसादि को शब्द पछाणे । सच्चे....

ज्ञान ध्यान किछु कर्म न जाणा
सार न जाणा तेरी राम । सच्चे···

सब ते वडा सतगुरु नानक
जिन कल राखी मेरी राम । सच्चे···

जिस के सिर ऊपर तू स्वामी
सो दुख कैसा पावे राम । सच्चे···

तेरे भरोसे मैं लाड लडाइआ
तू हर पिता तू हैं मेरी माइआ । सच्चे···

तुझ विन दूजा नाही कोय
तू करतार करे सो होय । सच्चे पातशाह···

तेरा जोर तेरी मन टेक
सदा २ जप नानक एक । सच्चे पातशाह···

अति ऊंचा तांका दरबारा
अंत नहीं किछु पारावारा । सच्चे पातशाह···

हम मैले तम ऊजले करते
हम निगुण तूं दाता राम । सच्चे शातशाह···

हम मूरख तुम चतुर सिआणे
तूं सर्व कला का ज्ञाता राम । सच्चे पातशा···

जीअ जंत सब तुध उपाए
जित २ भाणा तित २ लाय । सच्चे पातशाह···

सब किछ कीता तेरा होवे
नाही कछु असाडा राम । सच्चे···

तेरे जीव तूँ सद ही साथी
संसार सागर ते कढ दे हाथी । सच्चे···

आवण जावण इक खेल बनाया
आज्ञा कारी कीन्ही माया । सच्चे···
जो दीसे सो चालणहार
लपट रहयो तह अध अंधार । सच्चे···

भजन

दीनाबन्धु दीनानाथ अब तो कृपा कीजिए
आये है हम तेरे द्वारे चरणों में रख लीजिए । दीनाबन्धु···

भाई नहीं बन्धु नहीं कुटुम्ब परिवार नहीं
ऐसा कोई मीत नाही जाँके ठीग बैठिए । दीनाबन्धु···

सोने की सलैया नहीं रुपे का रुपैया नही पैसा कौड़ी गाठ नाही
जासो कछु लीजिए । दीनाबन्धु···

खेती नहीं बाड़ी नहीं वणज व्यापार नाही
ऐसी कोई शाह नाही जासो कछु लीजिए । दीनाबन्धु···

कहत मलूकदास छोड़ दे पराई आस तेरे चरणों में आय के
फिर शरण किस की लीजिए । दीनाबन्धु···

एक बार जो राम जी की शरण ग्रहण कर लेता है उसका जीवन बन जाता है ऐसा जैसा कमल रहता है जल में परन्तु शरण लेने के लिए प्रार्थना अवश्य करनी पड़ती है आओ तो मिलकर कहें ।

भजन

जो पकड़ा हाथ प्रभु तेरा
मेरा जीवन बना देना
शरण में आ गये तेरी।
शरण अपनी लगा लेना। जो पकड़ा···

मैं पापी हूं कुकर्मी हूं
मगर है आसरा तेरा
मेरे अवगुण क्षमा करना
शरण अपनी लगा लेना। जो पकड़ा···

नहीं कुछ जानते साधन
प्रभु तुझ को रिझाने का
तुम अपना दास समझ करके
सेवा में लगा लेना। जो पकड़ा···

प्रभु तू परम पावन है
आसरा मुझ को है तेरा
निराश्रय जानकर मुझ को
शरण अपनी लगा लेना। जो पकड़ा···

तुझ को छोड़कर प्रभु जी
मैं किसका आसरा ढूंढूं
गिरा हूं तेरे चरणों में
मुझे अब आप उठा लेना। जो पकड़ा···

भजन

बिना राम दर्शन के शान्ति नहीं
ऊधो ज्ञान चर्चा सुहाती नहीं है।
क्या हम सुने अब निगुर्ण कहानी
हमारी समझ में तो आती नहीं हैं।
बसी दिल के अन्दर
वह मोहन की मूरत
घड़ी पल कहीं दूर जाती नहीं है। बिना राम...
चर्चा उसी की है मेरी जुबा पर
बिना प्रेम के बात भाती नहीं है।
प्यारा सा दर्शन मैं उनका जो पाऊं
शेष विषयों की चर्चा सुहाती नहीं है।
तेरे नाम का है भरोसा यहां भारी
शेष सब कथा अब सुहाती नहीं है।
यह माया के चक्कर में न मुझ को फंसाना
तेरे बिन माया अब भाती नहीं है।
अपना प्यार न दिल से हटाना
झुठी दुनिया अब दिल को लुभाती नहीं।
स्वार्थ के नाते है रिश्ते यह सारे
तेरे प्यारे दर्शन बिन शान्ति नहीं।
लगाओ नय्या मेरी पार अब प्यारे
खिवैया बिना नैया चलती नहीं है।
सुने नाम माधव का हम तो निरन्तर
बिना प्रेम के बात भाती नहीं है।

भजन

तेरी शरण में आय के फिर आस किसकी कीजिए तेरे नाम का प्याला जो पी लिया फिर रस क्या कीजिए ।

जो देंगे प्रभु सोई लेंगे हम
जो खिलायेंगे प्रभु खा लेंगे हम
जिस हाल में रखेगा रह लेंगे हम
बिना विश्वास नाम चलता नहीं है ।

भजन

शरण में आये है हम तुम्हारी
दया करो हे दयालु भगवन् ।
संभालो बिगड़ी दशा हमारी
दया करो हे दयालु भगवन्
न हम में बल है न हम में शक्ति
न हम में साधन न हम में भक्ति ।
तुम्हारे दर के है हम भिखारी ।
दया करो हे दयालु भगवन् ।
प्रदान कर दो महान शक्ति
भरो हमारो में ज्ञान भक्ति ।
तभी कहाओगे ताप हारी
दया करो हे दयालु भगवन् ।
बुरे है जो हम तो है तुम्हारे
भले है जो हम तो हैं तुम्हारे ।
तुम्हारे दर के हम सवाली
दया करो हे दयालु भगवन् ।

जो तुम पिता हो तो हम है बालक
जो तुम हो स्वामी तो हम है सेवक ।
जो तुम हो ठाकुर तो हम पुजारी
दया करो हे दयालु भगवन् ।
सुना है हम अंश है तुम्हारे
तुम्ही हो सच्चे पिता हमारे ।
यह है तो सुबुद्धि तुमने क्यों विसारी
दया करो हे दयालु भगवन् ।
हमें तो टेक बस नाम की है
पुकार राधेश्याम की है
तुम्हारी तुम जानो निधिकारी
दया करो हे दयालु भगवन् ।
शरण में आये है हम तुम्हारी
दया करो हे दयालु भगवन्
संभालो बिगड़ी दशा हमारी
दया करो हे दयालु भगवन्

भजन

गोविन्द हरि गोपाल हरि
जय 2 प्रभु दीनदयाल हरी । गोविन्द हरि···
हम तेरी शरण में आन पड़े
प्रभु राखो हमारी लाज हरि । गोविन्द हरि
हरि दीनानाथ कहलाते हो
दुख हर्ता है प्रभु नाम तेरो
मेरी भी करना रक्षपाल हरि । गोविन्द हरि

हृप जान गये पहचान गये
छवि नजर आई तो मान गये — गोविन्द हरि
मेरी करना प्रतिपाल हरि ।
राधा ने तुझे आराधा था
अर्जुन ने प्रेम से बाँधा था
मेरी प्रेम की ज्योति बढ़ाया हरि । — गोविन्द हरि···
जो निष्कपटी निष्कामी है
जो मन अपने का स्वामी है
उसको मिलते तत्काल हरि । — गोविन्द हरि···
जो मात पिता आज्ञाकारी है
तन मन से परउपकारी है
उसको मिलते तत्काल हरि । — गोविन्द हरि···

भज गोविन्दा

भज गोविन्दा भज गोविन्दा । — भज गोविन्दा···
दुनिया है यह गोरख धन्धा । — भज गोविन्दा···
इस धन्धे में जो भजे गोविन्दा — भज गोविन्दा···
वही है बन्दा भज गोविन्दा ।
जो न अब भजे गोविन्दा वह बन्दा है गन्दा । — भज गोविन्दा···
बड़े भाग्य मानुष तन पावा । — भज गोविन्दा···
सुर दुर्लभ सद ग्रर्थन गावा । — भज गोविन्दा
गुरु सेवा ते भगति कमाई — भज गोविन्दा···
तब यह मानुष देही पाई — भज गोविन्दा···
इस देही को सिमरे देव — भज गोविन्दा···
सो देही भज हर की सेव

जब हमारा प्रभु से प्रेम बढ़ने लगता है तो हमारी Autachment संसार से अपने आप कम होने लग जाती है परन्तु संसार हमारी ओर आकर्षित होने लग जाता है।

जब प्रभु प्रेम का पूर बढ़ जाता है तो सांसरिक बातों में आनन्द नहीं आता।

जब प्रभु के दर्शन होते है तो आंसू झर झर बहते है फिर यह आँसू संसार के किसी भी पदार्थ के लिए नहीं आते सदा सुख आनन्द हो जाता है।

अरदास

इक आस यही अरदास यही
तेरी प्यारी छवि में निहारा करूं
इन नयनों के प्यालों में
भरकर प्रेम रस, रोज तेरे चरणों में पर डाला करूं।
तेरे प्रेम में बीते यह जीवन मेरा
तुझे अन्तर पट उतारा करूं
सुख दुख की कहानी सुना करूं
अपना जीवन तुझ पर वारा करूं

शब्द

प्रभु मेरे प्रीतम प्राण प्यारे
प्रेम भक्ति अपना नाम दीजे।
दयाल अनुग्रह घोर-2
सिमरूं चरण तुम्हारे प्रीतम हृदय तुम्हारी आसा
सत जना पे करूं वेनती मन दर्शन की प्यासा। प्रभु मेरे...
विघरत मरण जीवन हर मिलते जन को दर्शन दीजे
नाम आधार जीवन धन नानक प्रभु मेरे कृपा कीजे।

शब्द

करो कृपा गोपाल गोविन्दे अपना नाम जपाओ। करो कृपा...
काढ लिए प्रभु आन विखेते साध संग मन लाओ।
भ्रम भऊ मोह कटिओ गुरुवचनी अपना दर्श दिखाओ।
सब की रेन होय मन मेरा अँह बुद्धी तजाओ।
अपनी भक्ति दे दयाला वडभागी नानक हर पाओ।

शब्द

जीवनों में जीवन पाया
गुरु मुख भाये राम।
हरि नामो हर नाम देवे
मेरे प्राण वसाये राम।
हरि २ नाम मेरे प्राण वसाये
सब संसा दुख गवाइआ
अच्छपट अंगोचर गुरु वचन ध्याया
पवित्र परम पद पाया।
अनहद धुनि वाजहि नित वाजे
गाई सतगुरु वाणी
नानक दात करी प्रभु दाते
ज्योति ज्योति समाणी।
कर कृपा करो प्रभु दात
तुम्हारी स्तुति अस्तत करूँ दिन रात।
तूँ मेरा पिता तू है मेरा माता
तू मेरे जीअ प्राण सुख दाता

तू मेरा ठाकुर हऊं दास तेरा
तुझ बिन अवर नहीं को मेरा ।
हम तेरे जंत तू बजावनहारा
हम तेरे भिखारी दान दे दातारा
तऊ प्रसाद रंग रस माणे
घट घट अंतर तुम ही समाणे ।
तुम्हारी कृपा ते जपिए नाउ
साध संग तुम्हारे गुण गाऊ
तुम्हारी दया ते होय दर्द निवार
तुम्हारी मया ते कमल विगास
हऊ बलिहारी जाऊ गुरुदेव
सफल दर्शन तां की निरमलसेव
दया करो ठाकुर प्रभु मेरे
गुण गावे नानक नित तेरे ।

दर्शन की प्यास

दर्शन मांगू मांगू, दर्शन मांगू देहु प्यारे
तुम्हरी सेवा कौन कौन न तारे ।
जिस नीच को कोई न जाने
नाम जपत ओह चहूं कुट माने । दर्शन मांगू···
जां के निकट न आवे कोई
सगल सृष्टि वां के चरण मल धोई । दर्शन मांगू···
जो प्रानी काहूं न आवत काम
संत प्रसाद तां को जपिए नाम । दर्शन मांगू···
साध संग सोवत मन जागे तब प्रभु नानक मीठे लागे

ऐसो नाम तुम्हारो

ठाकुर ऐसो नाम तुम्हारो

,, ,, ,, ,,

सगल सृष्टि को धणी कहीजे । ठाकुर ऐसो···

जन को अंग निरारो

पतित पवित्र लिये कर अपने

सगल करते नमस्कारो । ठाकुर ऐसो···

चरनू जात कोऊ पूछे नाही

बाछहि चरण रवारो (सुन्दर) । ठाकुर ऐसो···

साध संग नानक बुद्ध पाई

हरि कीर्तन आधारो ।

नाम देव कबीर त्रिलोचन

मुक्त भयो चमयारो । ठाकुर ऐसो···

कृपा करो हरे

कृपा करो हरे, हरे कृपा करो हरे

नानक मांगे दरस दान कृपा करो हरे ।

जिन २ नाम ध्याया तिन के काज सरे

हरे तिन के काज सरे हर गुरु पूरा आराधिआ

दरगह सच खरे । हरे कृपा करे···

सर्व सुखा निध चरण हर भव जल विखम तरे

हर भय जल विखम तरे प्रेम भगति जिन पाइआ

विखिआ नाही जरे । हरे कृपा करो···

कूड़ गये दुविधा नसी पूर्ण सच भरे
हरे पूर्ण सच भरे पारब्रह्म प्रभ सेवदे
मन अन्दर एक धरे । हरे कृपा करो···
मांह दिवस मूर्त भले जिनका नदर करे
हरे जिनको नदर करे नानक मांगे दरस दान । कृपा करो हरे···

शिव अस्तुति

भज शिव हर शंकर गौरी श्याम वन्दे गंगा धारणी श्याम
शिव रुद्रम पशुपति विश्वानाय कलहर कांशी पूर्ण नाथ
भज वारि लोचन परमानन्दा नील-कंठा
तुम शरणानम् । शिव असुर निकन्दव
वाजक वन्दन सेवक के प्रतिपाला
शिव आवागमन मिटाओ शंकर भज शिव वारम्बारा

शब्द

सदा सोहागन नार है जां के राम भतारा
मुख मांगे सुख देत है जगजीवन प्यारा । सदा सोहागन···
कबहु न चढ़ें रंडपुरा जाने सब कोई
अजर अमर आवनासिया तां के नास न होइ ।
नर देही दिन दोय कि सुन गुरुजन मेरी
क्यों ऐसे का नेहड़मुए विपत्त घनेरी ।
न उपजे न विनसे संतन सुखदाई कहे दासी यह जानके मैं
प्रीत लगाई । सदा सुहागन···

गोविन्द नाममत विसरे री बाई अंतकाल जो लक्ष्मी सिमरे
ऐसी चिन्ता में जो मरे सर्प योन बल बल अवतरे।
अंतकाल जो लड़के सिमरे २ ऐसी चिन्ता में जो मरे
सूकर योन बल बल अवतरे।
अंतकाल जो माड़ी सिमरे ऐसी चिन्ता में जो मरे
प्रेत योन बल बल अवतरे।
अंतकाल जो स्त्री सिमरे ऐसी चिन्ता में जो मरे
वैश्या योन बल बल अवतरे।
अंतकाल जो नारायण सिमरे बदति त्रिलोच ते नर मुक्ता
पिताम्बरधारी तां के हृदय बसे। गोविन्द नाम···

क्या मांगू किछ थिर न रहा ही
देखत नयन चलयों जग जाई
लंका सी कोट समुद्र सी खाई
तिस रावण घर खबरन पाई
चंद्र सूरज जों के तपत रसोई
बसतर जों के कपड़े धोई।
एक लाख पूत सवा लाख नाति
तिस रावण घर दिया न बाती।
कहे कबीर सुनो री लोई
राम नाम बिन मुक्त न होई।
गुरुमत नामे राम बसाई
अस्थिर रहे न कतहू जाई।

सतगुरु पिया मेरी रंग दे चुनरिया काली न रंगयो पीली न रंगयो ऐसी रंग जैसी सांई की पगरिया।

कर ले सिंगार चतुर अलबेली साजन के घर जाना होगा
मिट्टी ओढन मिट्टी बिछायन मिट्टी में मिल जाना होगा।
हरि सिमरत तेरी जाय बलाय, सर्व कल्याण बसे मन आय।
जप मन मेरे एको नाम, जीअ तेरे के आवे काम।
रैणा विवस गुण गाओ अनत।
गुरु पूरे का निर्मल मंत्र। हर सिमरत···
छोड़ उपाव एक टेक राख
यहाँ पदारथ अमृत रस चाख। हर सिमरत···
विखम सागर सोई जन तरे
नानक जा को नदर करे। हर सिमरत···

शब्द

विसर नाही प्रभु दीनदयाला
तेरी शरण पूर्ण कृपाला
जंह चित आवे सो थान सुहावा
जित वेला विसरे ता लागे हावा।
तेरे जीअ तू सद ही साथी
संसार सागर ते कढ दे हाथी। विसर···
आवण जावण तुध ही किया
जिस तू राखे तिस दुख न थीमा। विसर···
तूँ एको साहब अवर न होर
विनय करूं नानक कर जोड़।

भजन

सब की नय्या पार लगैया कृष्ण कन्हैया सांवरे।
रामधुन लागी गोपाल धुन लागी
" " " " ।
जब २ भीड़ पड़ी भगतन पर
तब २ प्रभु अवतार लिया
दुख हरण प्रभु नाम हैं तेरा
भक्तों को तूने उभार दिया २
मेरी नय्या आप ही उभारो।
कृष्ण कन्हैया सांवरे
रामधुन लागी गोपाल धुन लागी
सब की नय्या पार लगैया
कृष्ण कन्हैया सांवरे
रामधुन लागी गोपाल धुन।

शब्द

राख पिता प्रभु मेरे
" " " "
मोह निगुर्ण सब गुणा तेरे
राख पिता प्रभु मेरे। राख पिता...
पंच बिखादी एक गरीबा
राखो राखण हारे
खेद करहि और बहुत सतावे
आइओ शरण तुहारे। राख पिता...

कर २ हारिओ अनिक बहु भाति
छोड़ कतहु नाही
एक बात ताँकी सुन ताँकी ओटा (आश्रय)
साध संग मिट जाई
(गीता में भी भगवान कहते है ।)
करता रहे सब कर्म भी
मेरा सदा आश्रय घरे
मेरी कृपा से प्राप्त वह
अवयय सनातन पद करे) ।'
कर कृपा संत मिले, मोह तिन ते धीरज पाया
संतो मंत्र दियो मोह निरभऊ
गुरु का शब्द कमाया । राख पिता प्रभु...
जीत लिये ओह महा विखादी
सहज सुहेली बाणी
कहो नानक मन भया प्रगासा
पाया पद निर्वाणी । राख पिता...

आओ तो मन को जगाये

कई लोग कहते है भगवान का नाम जोर से क्यों बोले भगवान सुनता नहीं अरे भगवान तो बहरा नही है हमारा मन सोया पड़ा है जोर से बोलने से तो यह जाग जायेगा और संतों के साथ बोलने से तो और भी जल्दी जागेगा इस लिए जब सब मिलकर बोलते है तो फिर अकेले में भी इसे बोलने की आदत सी हो जाती है उसे कहते है "सहज अवस्था अनहद धुनि बाणी" अन्दर से आवाजे आती है श्रीराम या राम राम ।

या मन चाहता है हरदम उसी की बातें उसी से वार्तालाप तो आओ मन को जगाए और प्यार से इसे कहें।

प्यारे राम राम बोल
राम राम
प्यारे राम राम बोल
राम राम।

त्यागो मन के सगल काम
प्यारे राम राम बोल राम राम।
राम राम बोल और कभी भी न डोल
मुख में मन में राम राम टोल। प्यारे राम राम बोल...

जिस बोलत मुख पवित्र होय
जिस सिमरत निर्मल है सोय। राम राम बोल...

जिस आराधे जग कछु न कहे
जिस की सेवा सब किछ लहे। राम राम बोल...

जिस के धारे धरण आकास
घट २ जिस का है प्रगास
जिस को चाहे सुर नर देव
हँत समा की लागो सेव। राम राम...

सगल धर्म में उत्तम धर्म
कर्म करतूत के ऊपर कर्म
जिस की गति मति कही न जाये
नानक जन हर २ ध्याये। राम राम...

भजन

ओहना तो सदके लावा में
जिना नू तेरिया लोड़ा
" " " " ने

उन्हा नू कादिया थोडा।
निकी जेही मीरा बांई
भावे अनजान सी
तेरा यश गांदी रहन्दी
तेरा ही ध्यान सी
उन्हां नू किवें भुलावा मैं
जिन्हा दी अज वी लोड़ा। ओहना तो सदके"

छोटा जेहा ध्रव भगत
नाले प्रहलाद सी
ओन्हा ते कृपा दृष्टि
तेरी अगाध सी
उन्हा नू किवें भुलावां मैं
जिन्हा दिया तेरे हथ डोरा। ओन्हा तो सदके—

लोकां भावे ताने दिते
तान्हया तो डरे नाही
लोकी कहदे मर गये
मैं आखा मरे नहीं

उन्हा नू किवें भुलावां मैं
जिन्हा दिग्रा तेरे हथ डोरा । सदके मे जांवा
एहो दान देना दाता
दासी नादान नूं
तेरा यश गांवदी २
छड देवा प्राण नूं
होर ते कछु न चाहवां मैं
चित्त चरण नाल जोड़ीं । सदके मैं...

अगर हम मांगे भी तो क्या मांगे उस सर्वशक्तिमान प्रभु से शेष तो जितने भी पदार्थ है सब नाशवान है इतना ही नही यह शरीर भी नाशवान है शरीर की हर एक अवस्था नाशवान है बचपन जवानी के द्वारा छीना जाता है जवानी बुढ़ापे के द्वारे छीन ली जाती है और बुढ़ापा मृत्यु के द्वारा छीन लिया जाता है फिर भी हम प्रभु से नाश्वन पदार्थों की ही मांग करते रहते हैं ।

इसलिए संत जन हमें सदा उपदेश यही देते है ए जीव तूं सच्चे नाम की मांग कर जिसमें तु मुक्ति को प्राप्त होगा । और वह नाम सदा सतसंग में ही प्राप्त होगा इसलिए यही प्रार्थना है ।

हे प्रभो ! सत्संग की वाड़ी, सारी उमर हरी भरी रहे, और इस को किसी की नजर न लगे ।

दिन पर दिन दूनी रातें चौगनी फले । नित नये सतसंगितों के फूल लगें । पिछले मुरझायें नहीं और आगे नित नये खिलें । कलम से कलम

भिड़े। दीपक से दीपक जले। आत्मा से आत्मा मिले। संसार साक्षात स्वर्ग बने। हर जीव को हर जीव से सहज प्यार हो। मन निर्मल हो, राग द्वेष से दुर रहें। प्रत्येक आत्मा को दूसरी आत्मा में अपना ही रूप दिखें। यह तब सम्भव है जब हर आत्मा प्रकट ब्रह्मरूप बने। जब जीव प्रवृति मार्ग त्याग करके स्वर्ग अपनाएं और समदर्शी हो निष्काम कर्म करें।

वसंत

आओ सखियो मिलकर गाए अपने प्रभु के गीत।
गीत गाये मंगल मनाये सदा वसंत मनाये।
आओ सखियो मिलकर गाए गीत···

वसंत

आज हमारे गृह वसंत गुन गाए प्रभु तुम वे अंत।
गुरु सेवऊ कर नमस्कार आज हमारे मंगलाचार।
आज हमारे महा आनन्द चित लथी भेटे गोविन्द।
आज हमारे बने फाग प्रभु संगी मिल खेलन लाज···

होली कीन्हों संत सेव रंग लागा अति लालदेव।
मन तन मअलिअ अतिअनूप सूके नाही छांव धूप।
सगली रुति हरिआ होय सद वसंत गुरु मिले देव।
विरख जमिओ है पारजात फूल लगे फल रत्न भाँति।
तृप्त अघाने हरि गुण गाय जन नानक हर २ ध्याये।'

वसंत

नानक तिना वसंत है जिन घर वसिया कंत ।
जिनके कंत दिसापुरी से महनिसि फिरे जलंत...

वसंत

गांधी जी का स्मृति दिवस

तिस वसंत जिस प्रभु कृपाल तिस वसंत जिस गुरु दयाल ।
मंगल तिस के जिस एक नाम तिस सद वसंत जिस हिरदे नाम...
गृह तां के वसंत गनी जां के कीरतन हर धुनि ।
प्रीति पारब्रहम मअ्रली मना ज्ञान कमाइए पूछ जना ।
सो तपसी जिस साध संग सद धिआनी जिस गुरहिरंग ।
से निरभऊ जिन भऊपाया सो सुखिया जिस भ्रम गवाइआ ।
सो एकाती जिस हृदय थाई सोई निहचल साच ठाई ।
एका खोजे एक प्रीति दरशन परसन हीत चीत...

वसंत

तिन वसंत जो हरि गुण गाय पूरे भाग हरि भगति कराये ।
इस मन को वसंत की लगे न सोय एह मन जलिआ दूजे दोय ।
एह मन बंधे बाधा कर्म कमाय माया मुठा सदा बिल लाये ।
एह मन छूटे जां सतगुरु भेटे जम काल की फिर आंव न हरे ।
एह मन छूटा गुरु लिया छडाई नानक माया मोह शब्द जलाये...

श्री राम

गुरु पास रहे या दूर रहें, नजरों में समाये रहते हैं।
इतना तो बतादे कोई हमें, क्या कृपा इसी को कहते हैं।

गुरु पास···

सुख आता आप नजर आते, दुख में धीरज बँधवाते हो।
दोनों को समझो एक समान, यह ध्यान दिलाते रहते हो।

गुरु पास···

जीवन की घड़ियाँ थोड़ी हैं, और मंजिल दुनिया की लम्बी।
छोड़ो इन पर जिम्मेदारी, यह पार लगाये रहते है।

गुरु पास···

इतनी सी बात जाननी है, जो पग पर पग धरते जाँय।
बेड़े को पार लगा देते, जो मल्लाह से मिलते रहते हैं।

गुरु पास···

जब गुरु रूपी प्रभु हमारे मन में व नयनों में समा जाते हैं तो उस सानिध्य की अनुभूति हम प्रतिपल प्रतिक्षण करते रहते है। जोकि उन की कृपा का एक ही साकार रूप होता है।

अतः···

(गुरु पास रहे या दूर रहे···
नयनों में समाये रहते हैं)···

भजन

किस चीज की कमी है, सतगुरु तेरी गली में
दे दो सहारा मुझको, आया तेरी गली में।
मैं हूँ प्रेम का प्यासा, मुक्ति की आस रखकर,
ले नाम का सहारा, घट में स्वरूप रखकर,
आया शरण में तेरी, सर धरके मैं तली में।
किस चीज की...

दासों का दास हूँ मैं, भक्ती का दान दे दो,
कुदरत छुपा के अपनी, भोले से बन रहे हो,
तेरा ही नूर देखूँ, इस जग की जल थली में।
किस चीज की...

आये नंगे पाँव, गजराज को बचाने,
और चीर द्रोपदी का, दरबार में बढ़ाने,
मेरी भी लाज रख लो, विषयों की वे कली में।
किस चीज...

दासुन खड़े हैं भगवन; कब से तेरे द्वारें,
कब मेहर होगी प्रियतम; बिगड़ी मेरी संवारे,
ढूढ़ा था जिसको वन 2, पाया इसी गली में।
किस चीज...

सत्य ही प्रभु है, व उसका नाम ही सत्यता है। जिस हृदय में प्रभु सदा विराजित हैं, एवं जिस स्थान पर उस प्यारे का सुमधुर गुण गान व नाम उच्चारण हो वही धन्य हैं।

वहाँ तो मस्तक स्वयंमेव ही नत् हो जाता हैं। इस मनोहारी चित्र को आइये मिलकर अपने हृदय में उतार ले।

सांचा तू गोपाल, साँच तेरो नाम है,
जहाँ सिमरन होवे तेरा, धन्य सो ठाव है।

सांचा...

सांचा तेरा भगत, जो तुझको जानता,
तीन लोक का राज्य वह मनं नहीं मानता।

सांचा—

झूठा नाता छोड़, तुझे लिव लाया,
तेरा सिमरण करके, परम पद पाया।

सांचा—

जिन्हों ऐ लाइ लाया, इस जग आयके,
उतर गये भव पार, हरि के गुण गायके।

सांचा—

तू ही माता तू ही पिता, तू ही हितबन्धु है,
कहत हैं दास तेरा, तुझ बिन धुन्ध हैं।

सांचा—

पल-पल सिमरण करेंगे, दुनियां से नहीं डरेंगे,
तू जो रखवाला बना, अब डरने का क्या काम है।

सांचा—

जिसके सिर ऊपर तू स्वामी सो दुख कैसा पावे राम,
तू जो मेरा बन गया, फिर चिन्ता का क्या काम है।
साँचा तू गोपाल, साँच तेरो नाम है—
श्री राम

आशीर्वाद

हमारा मन छोटे बच्चे के समान ही भोला है। जिसे पूर्ण जगत में व्याप्त अलौकिक शक्ति का आश्रय सदैव मिलता रहे, तथा संसार के झूठे मोहबन्धन का वास्तविक रूप में त्याग कर प्रभु चरणों में स्वतः ही लगा रहे।

तभी तो वह अदृश्य किन्तु कण कण में व्याप्त शक्ति (जगत् जननी माँ) इसे अपना आशीर्वाद देती है।

पूता माता की आसीस,
,, ,, ,, ,,
निमिष न विसरे तुमको हर हर,
सदा वसो जगदीश।
पूता माता की—

जिस सिमरत सब किलविख नासे,
पितरी होय उधारो।
पूता माता—

सो हर २ तुम सद ही जापो,
जा के अंत न पारो।
पूता माता—

सतगुरु तुम को होय दयाला, सत संग तेरी प्रीत,
कापड़ पत परमेश्वर राखे, भोजन कीरत न नीत ।

पूता माता—

अमृत पीवो सदा चिर जीवो, सिमरत अनंत अनन्ता,
रंग तमाशा पूर्ण आसा, कबहूं न व्यापे चिन्ता ।

पूता—

भवंर तुम्हारा एह मन होवे, हरि चरण होय कमला,
नानक दास उन संग लपटाइओ, जिऊ तूदे चात्रिक मौला ।

पूता माता को—

समर्पण

भक्त तो सदैव ही भगवान का है और भगवान भक्त के हैं। जब ऐसा भाव बन जाता है, तो द्वी (दुई) समाप्त होजाती है, अर्थात् भक्त और भगवान का भेद समाप्त होकर उनमें एक रूपता हो जाती है। देखिये इस सुन्दर झांकी का रोमांचिक वर्णन ।

मैं तेरा हूं, मैं तेरा हूं,
सदा मैं राम तेरा हूं ।
नहीं कुछ जानता साधन,
प्रभू तुझको रिझाने का,
मैं भक्ति में अधूरा हूं ।

मगर मैं राम तेरा हूं—

न जानूकौन हूं क्या हूं,
मगर मैं राम तेरा हूं,
न प्रेमी भक्त पूरा हूं । मगर मैं राम तेरा हूं—

बिछोड़े की बीमारी है,
लबों पर आहज़ारी है,
मैं सहता दुख घनेरा हूं।
मगर मैं राम तेरा हूं—

किसी का इष्ट कोई हो,
किसी का मित्र कोई हो,
कोई मतलब न रखता हूं।
मगर मैं राम तेरा हूं—

कोई दुनिया का बन्दा हो,
या पापों का पुलन्दा हो,
मैं सब से निकम्मा हूं।
मगर मैं राम तेरा हूं—

तू डाले नरक में मुझ को,
या देवे स्वर्ग ही मुझ को,
न ख्वाहिश कोई रखता हूं।
मगर मैं राम तेरा हूं—

कभी मैं बैठ रोता हूं,
कुछ अपने होश खोता हूं,
मैं सहता दुख घनेरा हूं।
मगर मैं राम तेरा हूं।

प्यारे प्रभु के नाम की महिमा जितनी भी गाइये उतनी ही कम है हजारों जिह्वाएँ मिलकर भी उस सर्वशक्तिमान के गुण गाने में समर्थ नहीं है—तभी तो हम सामूहिक रूप से गुण गान करने में आनन्द अनुभव करते हैं।

नाम लिया हरि का जिसने,
तिन और का नाम लिया न लिया ।
जड़ चेतन सब जगजीवन को, घट में अपने सम जान सदा,
सब का प्रतिपालन नित्य किया, तिन विपुन दान दिया न दिया ।
नाम लिया—

काम किये परमारथ के, तन से मन से, धन से करके,
जग अन्दर कीरत छाय रही, दिन चार विशेष जिया न जिया ।
नाम लिया—

जिसके घर में हरि की चर्चा, नित होवत है दिन रात सदा,
सत संग कथामत पान किया, तिन तीरथ नीर पिया न पिया ।
नाम लिया—

गुरु के उपदेश समागम से, जिनके घट अपने भीतर में,
ब्रह्मानन्द स्वरूप को जान लिया, तिन साधन योग किया न किया ।
नाम लिया जिसने—

भजन

प्रभु लावो अपनी चरणी.
,, ,, ,, ,,
आये अनिक जन्म भ्रम शरणी,
प्रभो लावो अपनी चरणी ।
ज्ञान ध्यान किछु कर्म न जाना,
नाहिन निर्मल करणी । प्रभु लावो अपनी—
सुख संपत्ति माया रस मीठे,
एह नहीं मन में धरणी । प्रभु लावो—

साध संगत के आँचल लावो;
एह विखम नदी जाय तरणी । प्रभु लावो—
हर दरशन तृपत नानक दासपावत,
हरि नाम रंग आभरनी । प्रभु लावो—

शरणागतम्

शरण पड़े की लाज प्रभु, राख लीजिये,
करके दया दयाल, गुनाह माफ कीजिये ।
गरचे कपूत हैं, पिता न दूर कर मुझे,
चरण कमल में आसरा, मुझको भी दीजिये ।
शरण पड़े—

तेरी खुशी का काम, कोई बन पड़ा नहीं,
अपने विरद को देख, जरा दिल में रीझिये ।
शरण पड़े—

तेरा बिना पालक, मेरा नहीं है दूसरा,
स्वारथ के सभी लोग हैं, किससे पति जिये ।
शरण पड़े—

दिल बीच लग रही, सद दर्शन की लालसा,
श्री राम मेरी विनती, अब तो सुन लीजिये ।
शरण पड़े—

आनन्दानुभूति

जब तन मन मंदिर में अपने प्यारे प्रभु की मनोहर छवि बस जाती है तो हर क्षण ही अनुभूति होती रहती है, इस अलौकिक आनन्द को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता) इस सुखनुभूति का साकार चित्र देखिये—और अनुभव कीजिये उस प्यारे की अपार कृपा।

आनन्द आनन्द आनन्द आया,
जो मुख से नहीं जाये बताया।

आनन्द—

दिल में बसी है वह प्यारी सी सूरत,
हर पल हर क्षण दिखती है सूरत,
उसी ने तो मेरा मन भरमाया।

आनन्द—

चरणों में तेरे अर्पण हो जीवन,
तेरी खुशी में यह बीते मेरा जीवन,
तेरे चरणों में अब तो डेरा लगाया।

आनन्द—

मस्ती तेरी की हूं अब मैं दिवानी,
तेरे प्रेम की सार्थकता मैंने अब जानी,
तेरे चरणों में शीश नवाया।

आनन्द—

चिन्ताओं का अब अंधेरा नहीं है,
कोई गम नहीं है, कोई शिकवा नहीं है,
तेरे चरणों में जो मन को लगाया,
आनन्द आनन्द आनन्द आया
जो मुख से नहीं जाये बताया।

आनन्द—

आश्रय

इस जीवन रूपी पथ में यदि तू 'श्रीराम' नाम रूपी भोजन को निरन्तर ग्रहण करता चलेगा तो तुझे ऐसी जीवन दायनी शक्ति प्राप्त होगी, कि सारे कार्य भी आप से आप होते जायेंगे, व कष्ट रूपी कण्टक भी अनुभव नहीं होंगे—अतः आइये साथ 2 बोलें।

श्रीराम श्रीराम पुकारे चला जा,
इसी नाम के तू सहारे चला जा।
न मझधार में छोड़ जीवन की नैया,
माया से बचकर किनारे चला जा। श्री राम—

बहुत दूर है तेरे साहिल की मंजिल,
अभी से भुजाएँ पसारे चला जा। श्री राम—

मिलेंगे तुझे राह में रहबर अनेकों,
विनय अपनी उनसे गुजारे चला जा। श्री राम

कहे राम प्यारे अनेकों जन्म की,
तू बिगड़ी दशा को सुधारे चले जा। श्री राम

जब आत्मा परमात्मा से मिलने को व्याकुल होती है, तो उसकी तड़प व विरह वेदना को व्याप्त नहीं किया जा सकता। उसकी तो केवल अनुभूति ही होती है। फिर भी उसे शब्दों में व्यक्त करने का प्रयास निम्नांकित है।

शब्द

मिल जा मुझे तू प्यारे, क्यों देरिया लगाई,
जलवा दिखा के अपना, किस जां गये छिपाई,
खाना नहीं है पीना, दिल को बड़ी हैरानी,
फिरती हूं मैं दीवानी, दिन रैणा चैन नहीं।

मिल जा—

कर प्रेम का इशारा, दिल ले लिया हमारा,
अब क्यों मुझे विसारा, सूरत नही दिखाई।

मिल जा—

विरहा की आग भारी, तन मन दिया है वारी,
तुम्हारी छवि है प्यारी, सूरत नहीं दिखाई।

मिल जा—

कर माफ भूल मेरी, दासन की दास चेरी,
अब तो करो न देरी, तेरी शरण में आई।

मिल जा—

शब्द

तेरा दीदार दीवाना।
घड़ी २ तुझे देखा चाहूं,

तेरा दीदार—

सुन साहब रहमाना, तेरा दीदार दीवाना ।
हुआ अलमस्त खबर नहीं तन की,
दिया प्रेम का प्याला ।

तेरा दीदार—

ठाड़े रहूं तो गिर २ पड़ता,
तेरे रंग मतवाला ।

तेरा दीदार—

खड़ा रहूं तो गिर २ पड़ता, ज्यों घर का बदा जादा,
नेकी की कुलहि सिर दीये, गले पैरहन साजा ।

तेरा दीदार—

तीजी और निमाजन जानूं, न जानूं घर रोजा,
बांग जिकर तब ही से निकली, जब से यह दिल खोजा ।

तेरा दीदार—

कहें मलूक अब कजा न करिये, दिल ही से दिल लाया,
मक्का हट हज हिय में देखा, जब से मुरीशद पाया ।

तेरा दीदार—

भजन

मैं तो उन संतन का दास जिन्होंने मन मार लिया ।
मन मारया तन वस में कीन्हां, हुआ भरम सब दूर,
बाहर तो कुछ दीखत नाहीं, भीतर चमके नूर ।

जिन्होंने मन—

काम क्रोध मद लोभ मारके, मिटी जगत की आस,
बलिहारि उन संतजना की, प्रकट किया प्रकाश।

जिन्होंने मन—

आपा त्याग जगत में बैठे, नहीं किसी से काम,
उनमें तो कुछ अन्तर नाही, संत कहो चाहे राम।

जिन्होंसे मन—

नरसी जी के सतगुरु स्वामी, दिया अमीरस पाय,
एक बूंद सागर में मिल गई, क्या तो करेंगा यमराज।

जिन्होंने मन—

चेतावनी

उठ जग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है,
जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है।

उठ जाग—

उठ नींद से अँखिया खोल जरा, और अपने प्रभु से ध्यान लगा,
यह प्रीति करन की रीति नहीं, प्रभु जागत हैं तू सोवत है,

उठ जाग—

जो कल करना है आज करले, जो आज करना है अब कर ले,
जब चिड़िया ने चुग खेत लिया फिर पछताये क्या होवत है।

उठ जाग—

नादान भुगत अपनी करनी, ऐ पापी पाप में चैन कहाँ,
जब पाप की गठरी शीश धरी, अब शीश पकड़ क्यों रोवत है।

उठ जाग मुसाफिर—

भजन

प्रेमी बनकर प्रेम से, ईश्वर के गुण गायाकार,
मन मन्दिर में ग़फ़िला, झाड़ू रोज लगाया कर।
प्रेमी बनकर—

सोने में तू रात गुजारी, दिन भर करता पाप रहा,
इसी तरह बर्बाद तू बन्दे करता अपना आप रहा,
बिस्तर से उठ प्रेमिया, सतसंग में तू जाया कर।
प्रेमी बनकर—

नर तन के चोले का पाना, बच्चों का कोई खेल नहीं,
जन्म २ के शुभ कर्मों का होता जब तक मेल नहीं,
नर तन पाने के लिये, उत्तम कर्म कमाया कर।
प्रेमी बनकर—

पास तेरे है दुखिया कोई, तूने मौज उड़ाई क्या,
भूखा प्यासा पड़ा पड़ोसी, तूने रोटी खाई क्या,
पहले सबसे पूछकर, फिर भोजन तू खाया कर,
प्रेमी बनकर—

ऐसे जीवन बीते तेरा, अगर तू सतसंग में आये,
संतों की संगत में आकर, अपना जीवन सफल बनाये,
अन्त में प्रभु को मिल जायेगा, उसी के गुण तू गाया कर,
प्रेमी बनकर—

अरदास

भगवान एहो अरदास मेरी ए,
मेहरवान चरणा दे पास मेरी ए।

तेरे आ चरण ते सिर रखा, धोवा चरण मैं भर २ अखा,
तूँ उठावे तां सिर चक्का, दयावान विनती ए खास मेरी ए।

भगवान एहो अरदास—

तेरे आ गीता वाक्य न जोवा, वाग पपीहे पागल थीवा,
स्वाति बूंद नाम दी पीवा, ब्रह्म ज्ञान आत्मा उदास मेरी है।

भगवान एहो अरदास—

आ हुण चरण नाल लगा लै, ततय। थम्बया तो बचा लै,
बूंद समुद्र विच समा लै, दयावान आत्म उदास मेरी ए।

भगवान एहो अरदास—

प्रार्थना

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भ्रम भद्राणि पश्यन्तु मा।
कश्चिद दुख भागभवत्।
सब पर दया करो भगवान।
सब पर कृपा करो भगवान।
सब का सब विधि हो कल्याण।

सब जन लेवें तुम्हारा नाम ।
तभी होगा सब का कल्याण ।
धर्म की जय हो ।
अधर्म का नाश हो ।
प्राणियों में सदभावना हो ।
विश्व का कल्याण हो ।

हर हर महादेव—

आरती

जगमग २ ज्योति जगी है ।
मेरे राम जी की आरती होने लगी है ।
भक्ति का दीपक प्रेम की बाती ।
साधु संत करे दिन राती
यही लालसा मन में लगी है ।
घट २ देखूं ज्योति तुम्हारी
सदा २ जाऊँ बलिहारी
अभी यही लालसा मन में लगी हैं
जगमग २ ज्योति जगी है ।
जहाँ २ जाऊ तहां तेरी सेवा
तुम सा ठाकुर अवर न देवा
अभी यही लालसा मन में लगी है ।
वाद विवाद काहू सिऊ न कीजे
रसना राम रसायण पीजे
यही लालसा मन में लगी है ।
गुरु पितु मात बन्धु पति देवा

सब मोहि कहे जाने दृढ़ सेवा
अभी यही लालसा मन में लगी है।
सियाराम मय सब जुग पाणी
करहु प्रणाम जोर जग पासरी
अभी यही लालसा मन में लगी है।
घर सुख बसिया बाहर सुख पाया
कहो नानक गुरु मन्त्र दृढ़ाइया
अभी यही लालसा मन में लगी है।

(चलता फिरता मन्दिर)

तन चलता फिरता मन्दिर है,
प्रभु बैठा इसके अन्दर है। तन चलता—
इस तन के है नौ दरवाजे,
बाजे इस में अनहद बाजे,
प्रभु दिखता इसके अन्दर है। तन चलता मन्दिर—
गुरु पूरे ने कृपा कीन्हीं,
मेरी चोली सब रंग दीन्हीं,
प्रभु बैठा इसके अन्दर है,
कोई सुनता मस्त कलन्दर है। तन चलता—
गुरु पूरे न भेद बताया,
प्रभु अबनाशी घर में आया,
प्रभु बैठा मेरे अन्दर है।
तन चलता—

हरदम अपने प्रभु गुण गाऊं,
हरदम तुझ को मन में पाऊं,
ऐसा मेरा मन मन्दिर है। तन चलता—

आंख मूंदकर ध्यान लगाऊं,
प्रभु अपने मन से ज्योति जगाऊं,
प्रभु बैठा मेरे अन्दर है। तन चलता—

भजन

मुझे है काम ईश्वर से,
जगत रूठे तो रूठन दे। मुझे—

कुटुम्ब परिवार सुत दारा, माल धन लाज लोकन की,
प्रभु के भजन करने में, अगर छूटे तो छूटन दे। मुझे—

बैठ संतन की संगत में, करू कल्याण मैं अपना,
लोग दुनिया के भोगो, मौज लूटे तो लूटन दे। मुझे है—

मेरे सिर पाप की मटकी, मेरे गुरुदेव ने झटकी,
वह ब्रह्मानन्द मे पटकी,
अगर फूटे तो फूटन दे। मुझे—

हे दीनाबन्धु करूणा सिन्धु, पार करो मोरी नैया।

हे दीनाबन्धु—

नैया मेरी तेरे हवाले, लहर लहर प्रभु आप संभाले।

हे दीनाबन्धु—

नैया मेरी भई पुरानी, विषयों का इसमें भर गया पानी।

हे दीनाबन्धु—

स्वाद बाद इक मद माया, इन संग लाग रत्न जन्म गवाया।

हे दीनाबन्धु—

दुखः भंजन जगजीवन हरि राया,

सगल त्याग मैं तेरी शरणी आया।

हे दीनाबन्धु—

तूं दाता प्रभु अन्तरयामी, काची देह मनुख अभिमानी,

हे दीनाबन्धु···

पतित पावन प्रभु नाम तुम्हारे, राख लेहो मोहे निगुर्ण आरे।

हे दीनाबन्धु···

राम २ सदा सहाई, राम ४ लिव लाई।

हे दीनाबन्धु—

मना मौज़ वड़ी है हरि नाम के अन्दर;
" " " " " " "
ओह तो सारे जग दा वाली है, ओये शाहंशाह वी सवाली है।
चण्द तारे वसन ओहदी शान दे अन्दर। मना मौज...

तेरी कुदरता दा की शुमार दसा, तेरा केड़ा २ उपकार दसां,
इतनी ताकत नही है, इस जुवान दे अन्दर। मना मौज...

कोई राम कहे कोई शाम कहे, नटवर कोई नागर कन्ह कहे,
मेरा हरि वासे हर घट अन्दर। मना मौज...

जेड़ा नाम दे प्याले पीदा है, कह ता सदा ही मर मर जीदा है,
ऐसी शक्ति है प्रभु दे नाम दे अन्दर। मौज...

हरि चरण दे नाल

लगा रहे हरि चरण दे नाल,
मन मेरा लगा रहे।
उठत बैठत हरि 2 ध्याऊं, मार्ग चलत हरि गुण गाऊं,
ऐसो करो करतार। मन मेरा लगा रहे

जागत सोवत शरण तेम्हारी,
इत उत देखू ओट तुम्हारी। ऐसा करो करतार

चाहे देवे दुख मलाइया,
चाहे साग उवाल । मन मेरा लगा रहे—

चाहे देवे महल माड़ियां,
चाहे झोपड़ी उसार । मन मेरा—

प्रभु मेरे संग सदा है नाले,
सिमर २ तिस सदा संभाले,
भली करेगे करतार । मन मेरा—
राम २ संग कर व्यवहार,
राम २ मेरे प्राण आधार ।
ऐसा करो करतार । मन मेरा—
दीनदयाल भरोसे तेरे,
सब परिवार चढ़ाया बेड़े,
आप करेगे भव पार । मन मेरा—

जौ तिस भावे तौ हुकम मनाई,
इस बेड़ को पार लघाई,
मन बेचो सतगुरु पास । मन मेरा—

जो मन भगवान के रंग में रंगे जाते है वह कभी भी डोलते नहीं और जो पीछे हट जाते है उनको अभी रंग लगा ही नहीं इस प्रकार गुरु साहब अपनी वाणी में अपने फरमाते है कि मेरी आत्मा तो साई के रंग में रक्त हो गई है ।

शब्द

रतिया ३ साईं नाल मैं रतिया,
मेरे प्यारे गुरुं नाल मैं रतिया ।
रते न सेई जेड़े मुख न मोड़न,
जिन्हा सिफाता साईं ।

साईं नाल मैं रतिया—

झड़-झड़ पैंदे कचे विरही,
जिन्हां कार न आई ।

साईं नाल में,

भजन

राम नाम अति मीठा है कोई गाके देख ले,
आ जाते हैं राम कोई बुलाके देख ले ।
जिसके मन अभिमान बसे भगवान कहां से आये,
तेरे मन में घोर अन्धेरा राम कहां से आए ।
रूप राम का भक्ति की जोत जगाके देख ले,
आ जाते है राम कोई बुलाके देख ले ।
मन भगवान का मंदिर है यहां मैल न आने देना,
हीरा जन्म मिला है इसको व्यर्थ न जाने देना,
राम नाम का रस पीकर पिलाकर देख ले ।

आ जाते हैं—

आवे नाम पे आ जाते हैं, है कोई बुलाने वाला,
बिक जाते हैं राम है कोई मोल चुकाने वाला ।
राम नाम की महिमा को तू गा के देख ले,
आ जाते हैं राम कोई बुलाके देख ले ।

भजन

जरा आ शरण मेरे राम की,
मेरा राम करुणा निधान है। जरा आ शरण—

घट घट में है वही रम रहा,
वह तो जगत का भगवान है। जरा आ शरण—

भक्ति में उसकी तू हो मग्न, उसके पाने की तू लगा लग्न,
तेरे पाप सब धुल जाएंगे, प्रभु का नाम ऐसा महान है।
जरा आ शरण—

लिया आसरा जिस नाम का, वही बन गया मेरे राम का,
जिस नाम से पत्थर तरे, फिर तेरा तरना आसान है।
जरा आ शरण—

लगी भीलनी को यह आस थी, प्रभु कब बुझेगी मेरी प्यास भी,
जूठे बेर खाए राम ने, जिसे जाने सारा जहान है।
जरा आ शरण—

तेरी दासी कब से पुकारती, तेरे चरणों में अर्ज गुजारती,
मत भूल जाना ए प्रभु, तेरी दासी बड़ी अनजान है।
जरा आ शरण—

पल पल में उसको तू याद कर, उसके आगे सब फरयाद कर,
तेरे पाप सब धुल जाएंगे, प्रभु का नाम ऐसा महान है।
जरा आ शरण—

कर सेवा दुनियां दारों की, बल हीन बे शवत बेचारों की,
तेरे बन्धन आप कट जायेंगे, प्रभु का नाम ऐसा महान है।
जरा आ शरण—

राम ही राम

मेरो मन राम ही राम रटै रे,
जन्म-जन्म के खत जो पुराने,
नाम ही लेत फटे रे। मेरो मन—

राम नाम में बल बड़ा भारी,
तर गई जिससे अहिल्या नारी,
कोटक पाप कटे रे। मेरो मन—

राम नाम की चढ़ी खुमारी,
हल्की हो गई दुनियाँ दारी,
तेरा मन क्यों हटे रे। मेरो मन—

राम नाम उर में धारो,
अपने सगले काज संवारो,
कभी न तू नटे रे। मेरो मन—

कृपा-धाम

कर कृपा प्रभु दीन दयाला ।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ॥

राम जी राम राम

कृपा धाम

C-2B, Janak Puri, New Delhi-110058. Ph. : 25517225